thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 42 13 से 19 नवम्बर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 मा. कृ.-07

आर्य समाज मुम्बई (काकड़वाड़ी) की मुलुण्ड शाखा का रजत जयन्ती समारोह धूमधाम से सम्पन्न

आर्य नेता श्री मिठाई लाल सिंह जी ने अपने कर कमलों से किया ध्वजारोहण

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का किया गया भव्य स्वागत तथा अभिनन्दन

आर्य समाज मुम्बई (काकड़वाड़ी) की मुलुण्ड शाखा के पच्चीसवें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में रजत जयन्ती समारोह का उत्साहपूर्ण वातावरण में भव्य आयोजन 3 से 6 नवम्बर, 2014 तक किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान युवा हृदय सम्राट स्वामी आर्यवेश जी को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। स्वामी जी के अतिरिक्त आर्य समाज के युवा विद्वान, प्रखर वक्ता, मनीषी एवं आर्य समाज मुम्बई के परामर्शदाता तथा आर्ष गुरुकुल एटा के प्राचार्य डॉ. वागीश शर्मा, युवा संन्यासी तथा ओजस्वी वक्ता स्वामी श्रद्धानन्द तथा युवा आर्य भजनोपदेशक श्री दिनेश दत्त आर्य भी समारोह में उपस्थित थे।

पं. देवदत्त शर्मा (अमरावती) के कुशल संयोजन एवं संचालन में यह समारोह अत्यन्त शानदार तरीके से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर चारों दिन प्रात: 8.30 से 11.30 तक सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आकर्षक आयोजन किया गया। इस सामवेद पारायण महायज्ञ के ब्रह्मा के पद को सुशोभित किया, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी युवा संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने तथा सुमधुर वेद पाठ का पदभार सम्भाला पं. नीरज कुमार शास्त्री, पं. धर्मपाल शास्त्री, पं. बाल कृष्ण शास्त्री तथा पं. चन्द्रपाल शास्त्री जी ने। इस विशेष यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था का दायित्व पं. महेन्द्र शास्त्री, पं. कैलाश शास्त्री, पं. वीर पाल शास्त्री तथा पं. योगेश शास्त्री जी आदि को सौंपा गया था। सम्पूर्ण कार्यक्रम के संयोजन में पं. श्रवण कुमार शर्मा का विशेष सहयोग रहा।

इस चार दिवसीय वार्षिकोत्सव का उद्घाटन 3 नवम्बर को प्रात: 8 बजे ओ३म् ध्वजारोहण के साथ हुआ। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की पावन गरिमामयी उपस्थिति में प्रसिद्ध उद्योगपति एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह के कर कमलों से तालियों की गड़गड़ाहट के बीच ध्वजोत्तोलन हुआ। प्रतिदिन प्रात: यज्ञोपरान्त स्वामी आर्यवेश जी के विभिन्न विषयों पर होने वाले हृदयग्राही, प्रेरणाप्रद तथा जीवनोत्थानकारी प्रवचनों ने श्रोताओं पर गहरा प्रभाव डाला तथा उनके प्रवचनों को अत्यन्त तन्मयता से श्रवण किया गया। स्वामी जी के अतिरिक्त स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा डॉ. वागीश जी के प्रभावशाली प्रवचनों का कार्यक्रम भी निरन्तर चलता रहा। 4 नवम्बर को वागीश जी का जन्मदिवस भी था जिसे भव्यता के साथ मनाया गया। स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ पर विशेष आहुतियों के

अगले पृष्ठ पर जारी है

thearyasamaj.org

पृष्ठ–1 का शेष

आर्य समाज मुम्बई (काकड़वाड़ी) की मुलुण्ड शाखा का रजत जयन्ती समारोह धूमधाम से सम्पन्न

माध्यम से उन्हें शुभकामनायें देकर उनके यशस्वी जीवन तथा दीर्घायुष्य की कामना की। आर्य समाज की ओर से स्मृति चिन्ह तथा शॉल भेंटकर तथा स्त्री आर्य समाज की तरफ से वागीश जी का स्वागत करते हुए उन्हें बधाई दी गई। समारोह के सायंकालीन सत्रों में विशिष्ट अतिथि भी सम्मिलित हुए। 3 नवम्बर को सायंकालीन सत्र में श्री चन्द्रभूषण जी गिरोत्रा आर्य समाज चैम्बूर मुख्य अतिथि थे। 4 नवम्बर को मुख्य अतिथि के रूप में श्री अरूण जी अब्रोल, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई पधारे वहीं 5 नवम्बर को श्री प्रेम प्रकाश जी कमल प्रसिद्ध उद्योगपति मुम्बई मुख्य अतिथि रहे। 6 नवम्बर को समापन सत्र में श्री मिठाई लाल सिंह मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। इस भव्य कार्यक्रम में 5 नवम्बर को 2.30 से 5 बजे तक महिला सम्मेलन का आयोजन भी विशेष रूप से किया गया। महिला सम्मेलन में श्रीमती सुमिता सिंह मुख्य अतिथि तथा श्रीमती प्रीति शास्त्री, श्रीमती कुलदीप शास्त्री, श्रीमती सुधा गुप्ता आदि ने अपने विचारों से महिलाओं को प्रेरणा प्रदान की। सम्मेलन का संयोजन विदुषी डॉ. अनीता शास्त्री ने अत्यन्त कुशलता पूर्वक किया।

महिला सम्मेलन स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में मातृशक्ति का आह्वान करते हुए कहा कि महिलाओं पर हो रहे विभिन्न प्रकार के आक्रमणों का जमकर विरोध करें उन्होंने कहा कि जब तक अन्याय का प्रतिकार नहीं किया जायेगा तब तक अत्याचार बन्द नहीं होंगे। इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि श्रीमती सुमिता सिंह ने स्वामी जी को आश्वस्त किया कि बहुत शीघ्र मुम्बई की समस्त आर्य समाजों की महिलाओं को संगठित करके विभिन्न बुराईयों के आन्दोलन प्रारम्भ किया जायेगा तथा आवाज बुलन्द की जायेगी तथा महिलाओं का शक्तिशाली संगठन बनाया जायेगा।

आर्य समाज मुम्बई के इस समारोह में आर्यजनों का उत्साह देखते ही बनता था। पूरी मुम्बई के विभिन्न क्षेत्रों से श्रोता उपस्थित होकर विद्वानों के विचारों से लाभान्वित होते रहे। विभिन्न विषयों पर डॉ. वागीश जी तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने प्रभावशाली प्रेरणादायक व्याख्यानों से जन सामान्य को विशेष रूप से प्रभावित किया। विभिन्न अवसरों पर बोलते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के तेजस्वी तथा प्रभावी स्वरूप को एकबार फिर से देश के सामने प्रस्तुत करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आप अपने हृदय में झांककर देखें, सोचें कि महर्षि की इस वाटिका को अपने त्याग और समर्पण से कैसे हरा-भरा बना सकते हैं। बढ़ती पाश्चात्य सभ्यता की लहर की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि इस लहर से सबसे ज्यादा नुकसान हमारी युवा शक्ति का हो रहा है। आज का युवा नशे का शिकार हो रहा है तथा पतन के गर्त में गिरता जा रहा है। युवाओं को बचाने का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व हमारे ऊपर है। हम सब प्रयास करें और अधिक से अधिक संख्या में युवाओं को आर्य समाज में लायें, उन्हें शिक्षित-प्रशिक्षत कर आर्य समाज का सदस्य बनायें। आर्य समाज में उनकी ऊर्जा का विशेष लाभ लिया जा सकता है। स्वामी जी ने प्रतिदिन समाज की किसी न किसी एक बुराई तथा समस्या पर वेद मंत्रों के आधार पर समाधान प्रस्तुत करते हुए ओजस्वी विचार प्रस्तुत किये जिसे श्रोताओं ने बेहद पसन्द किया। अन्तिम दिन प्रात:कालीन सत्र में यज्ञ के उपरान्त स्वामी जी ने लगभग एक हजार की संख्या में उपस्थित श्रोत्राओं को साधना, स्वाध्याय, समाज सेवा आदि को जीवन में अपनाने तथा क्रोध, परनिन्दा, ईर्ष्या, द्वेष आदि छोड़ने का संकल्प दिलवाया जिसे श्रोताओं ने यज्ञ में आहुति देकर तथा हाथ उठाकर स्वीकार किया। समापन सत्र के अवसर पर स्वामी जी ने आर्य नेता श्री मिठाई लाल सिंह जी की उपस्थिति में ओजस्वी उद्बोधन देकर आर्यजनों का आह्वान किया कि आर्यो उठो, जागो और अपने स्वरूप को पहचानों! आर्य समाज में कुछ ऐसे कार्यक्रम निर्धारित होने चाहिए जिससे आर्य समाजों में प्रतिदिन चहल-पहल रहे और स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इस प्रकार हम आर्य समाज को उपयोगी समाज का स्वरूप प्रदान कर सकते हैं। स्वामी जी ने कहा कि सप्तक्रांति के मुद्दों को लेकर पूरे देश में क्रांति का बिगुल बजाया जायेगा तथा नशाखोरी, जातिवाद, महिलाओं पर अत्याचार, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, कन्याभ्रूण हत्या एवं पाखण्ड के विरुद्ध पूरे राष्ट्र में जन-चेतना के माध्यम से प्रभावी वातावरण तैयार किया जायेगा तथा अन्य संगठनों का भी भरपूर सहयोग प्राप्त किया जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि आज आवश्यकता परस्पर मिल बैठकर आर्य समाज के सभी विवादों को सुलझाने की और एक समयबद्ध कार्यक्रम बनाकर कार्य करने की है। बिखराव के कारण आर्य समाज की छवि को गहरा धक्का लग रहा है। स्वामी जी ने श्री मिठाई लाल सिंह जी की उपस्थिति में आर्य समाज में एकता लाने पर विशेष बल दिया उन्होंने उनसे आग्रह किया कि वे इस दिशा में आगे बढ़कर पहल करें।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में श्री मिठाई लाल सिंह ने स्वामी जी के ओजस्वी उद्बोधन की विशेष प्रशंसा करते हुए एकता प्रस्ताव पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा कहा कि वे इस मामले में विशेष प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि एक व्यवस्थित तथा प्रभावशाली सार्वदेशिक सभा बनाने के लिए मैं हर प्रकार से सहयोग देने के लिए तैयार हूँ।

कार्यक्रम की सफलता में आर्य समाज के प्रधान श्री देशबन्धु शर्मा, मंत्री श्री विजय कुमार गौतम, उप्रपधान श्री राघव भाई पटेल, उपप्रधाना माता कमला देवी पाण्डे, उपमंत्री श्री महावीर शर्मा, कोषाध्यक्ष किशन लाल महाजन, पुस्तकाध्यक्ष प्रेमा शुक्ला, ट्रस्टी श्री रमन चोपड़ा एवं उनके अन्य सभी सहयोगियों ने विशेष परिश्रम किया। आर्य समाज के मंत्री श्री विजय गौतम ने सभी विद्वानों, विशिष्ट अतिथियों व सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए समस्त सदस्यों तथा श्रोताओं का विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया। पं. देवदत्त शर्मा जी की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही उनके संयोजन की शैली अत्यन्त प्रभावशाली थी उन्होंने अपने संयोजन से कार्यक्रम में जीवन्तता प्रदान की। अत्यन्त कुशलता पूर्वक सभाओं की प्रस्तुति के कारण उन्हें ''सभा सम्राट'' की संज्ञा से विभूषित किया जाये तो यह अतिसंयोक्ति नहीं होगी। आर्य समाज मुम्बई से आपका बहुत पुराना सम्बन्ध है। अमरावती में बहुत बड़ी-बड़ी सभाओं जिनमें एक लाख तक की उपस्थिति होती है वहां वे अत्यन्त कुशलता पूर्वक संयोजन करते हैं। स्वामी जी ने उनका आभार तथा प्रशस्ति करते हुए उनके दीर्घायुष्य की कामना की। पं. देवदत्त जी ने स्वामी जी को अमरावती आने का निमंत्रण दिया। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. वागीश शर्मा जी लम्बे समय से आर्य समाज काकड़वाड़ी से जुड़े हुए हैं। वे आर्य समाज के परामर्शदाता हैं तथा उसके माध्यम से कार्य कर रहे हैं। उनकी भाषणशैली से आर्य समाज ही नहीं बाहर के लोग भी बेहद प्रभावित होते हैं। वर्तमान में देश-विदेश में तथा टेलीविजन में भी उनके व्याख्यान सुनने को मिलते रहते हैं। चार दिन विभिन्न समारोहों से परिपूर्ण यह कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

आर्य समाज, मुम्बई रजत जयन्ती के संयोजक श्री देवदत्त जी शर्मा अमरावती का सहृदय सम्मान

श्री–मानों के चरणों में हम, अपना शीश झुकाते हैं।
दे–वों की पूजा करना हमें वेद शास्त्र बतलाते हैं।टेक।।
व–न्दनीय का हो अभिनन्दन, शिष्टाचार कहाता है।
द+रवाजा न बन्द कभी हो, ज्ञानचक्षु खुल जाता है।।
त+यागी और तपस्वियों का, सब इतिहास सुनाते हैं।।1।।
त–त्पर रहता सदा सर्वदा, आगे बढ़ता जाता है।
जी–वन के उद्देश्य मार्ग से, कदम न पीछे हटाता है।।
श–रण में आकरके ईश्वर की, सुख-शान्ति को पाते हैं।।2।।
र+अंग-विरंगी दुनिया का यह, रंग-विरंग नजारा है।
मा–नव से दानव न बनता, सबको देता सहारा है।।
अ–मर हो गये जो बलिदानी, उनका यश हम गाते हैं।।3।।
म–रता नहीं सदा जीता है, शुभ कर्मो का तपस्वी।
रा–वण का जो किया खात्मा, राम था वीर यशस्वी।।
व–न्दनीय हैं आप हमारे, हम सब मिलकर गाते हैं।।4।।
ती–न ताप सन्ताप कभी नहीं, जिसको विचलित करते।
का–र्य किया ऋषि दयानन्द का, वेद प्रथा प्रचलित करते।।
स–हनशील और कर्मशील ही, धर्माचरण सिखाते हैं।।5।।
हृ–दय नीर समान शुद्ध है, वायुवत् निर्मल-शीतल।
द–या भावना, मन विशाल है परं पुनीत महा उज्ज्वल।।
य–म-नियम अष्टांग योग का, शुभ सन्देश सुनाते हैं।।6।।
सं–चालन के कुशल खिलाड़ी जग-जाहिर सब जानते हैं।
मा+न और मर्यादाओं को, आप सभी पहचनाते हैं।।
न–हीं चाहना बड़े मान की, अपमानों को पीते हैं।।7।।

श्रद्धावनत्

पं. महेन्द्र कुमार शास्त्री, पं. वीरपाल शास्त्री, पं. बाल कृष्ण शास्त्री, विजय कुमार गौतम-मन्त्री आर्य समाज मुम्बई तथा समस्त अधिकारीगण

thearyasamaj.org

विचारणीय प्रसंग

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष वर्तमान के सन्दर्भ में

– डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन शब्दों का अनादि काल से सम्बन्ध रहा है और अनन्त काल तक रहेगा। ये मात्र शब्द नहीं है; अपितु मनुष्य जीवन के प्रधान उद्देश्य हैं। मनुष्य जीवन का अपना एक उद्देश्य होता है, होना आवश्यक भी है। उद्देश्य के बिना जीवन निरर्थक-सा लगता है। उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मनुष्य अथक परिश्रम करता है। जब उद्देश्यों की पूर्ति करने में मनुष्य को सफलता मिलती है, तब मनुष्य पुरुषार्थी कहलाता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये मनुष्य के चार पुरुषार्थ 'पुरुषार्थ-चतुष्टय' कहलाते हैं। वैदिक सन्ध्या के अन्त में ईश्वर से प्रार्थना की जाती है –

''हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयानेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः॥' (हे करुणा के भण्डार परमात्मन्! आपकी कृपा से इस जप, उपासना आदि कर्म से हमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की शीघ्र ही सिद्धि हो जाये।)

वैदिक काल के अनेक सिद्धान्त महाभारत काल तक प्रचलित रहे। इसी काल में वैदिक सिद्धान्तों का पतन होता हुआ दृष्टिगोचर होता है। वैदिक सिद्धान्तों के अभाव के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ। इस युद्ध ने आर्यावर्त की गरिमामयी संस्कृति ही समाप्तप्राय कर दी। युद्ध के पश्चात् समय परिवर्तित होता गया। मनुष्य जीवन के उद्देश्य भी बदलते गये। पिता-पुत्र, भाई-भाई, माता-पुत्री, बहू-बहन आदि के रिश्ते में परिवर्तन आया। गृहस्थ जीवन का अर्थ भी बदल गया। मनुष्य जीवन से जुड़े हुए पुरुषार्थ – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के अर्थ भी बदल गये। आज तो इन पुरुषार्थियों के बीच का सौहार्द, भाईचारा, पारस्परिक आदान-प्रदान, एक-दूसरे को परिपुष्ट करने की प्रवृत्ति खो चुकी है।

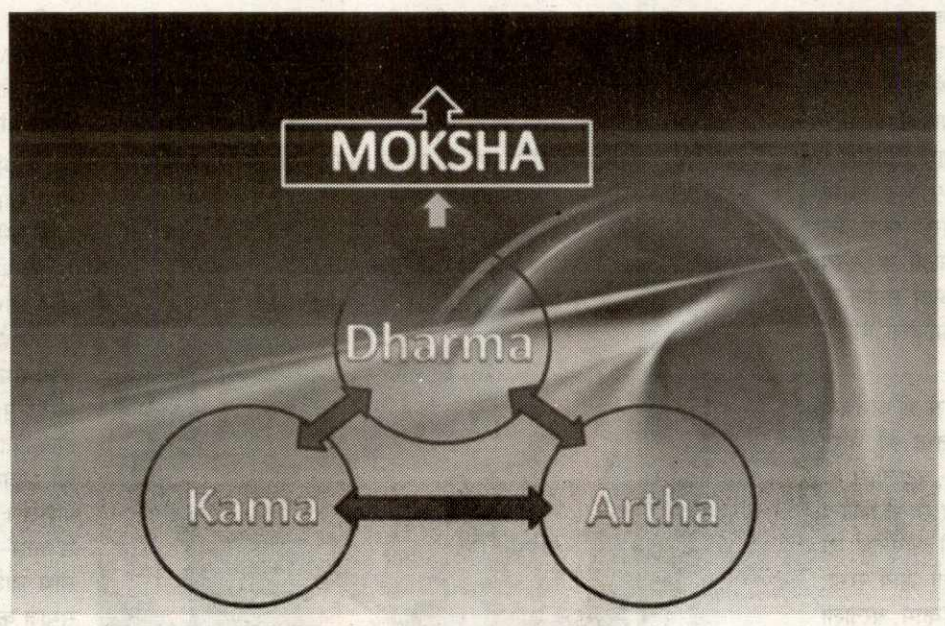

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन से अलग हो, खुले मैदान में पहुँचे हुए हैं। एक-दूसरे से भिड़ रहे हैं। एक-दूसरे को नीचा दिखाकर अपनी-अपनी श्रेष्ठता का बखान करने लगे हैं। 'धर्म' गरज उठा, 'मैं मनुष्य जीवन के अभ्युदय तथा निःश्रेयस् का साधन हूँ, लौकिक और पारलौकिक कर्म का प्रतिरूप हूँ। धर्म को बीच में ही टोकते, अपनी मूँछ पर ताव देते हुए, अर्थ ने अपना कहना प्रारम्भ कर दिया – ''अरे धर्म! तुम अपने अभ्युदय, निःश्रेयस् आदि शब्दों को भूल जाओ। तुम में अब यह भाव कहाँ है?मैं ही मनुष्य जीवन का केन्द्र बिन्दु हूँ। मैं ही धन हूँ, सम्पत्ति हूँ। अर्थ की प्राप्ति मानव जीवन की अन्तःप्रेरणा रही है, मैं ही मानव जीवन की सहज प्रवृत्ति हूँ। धर्म और अर्थ के बीच संघर्षमय वाद-विवाद के समय 'काम' भी चुप बैठा नहीं है। अपनी कमीज की आस्तीनें ऊपर चढ़ाते वह भी इसी संघर्ष में कूद पड़ा और कहने लगा, ''अरे धर्म और अर्थ! मेरी ओर भी निहारो, मुझे भी निहारो, मुझे भी पहचानो, मेरी श्रेष्ठता को भी जानने का प्रयास करो। मैं ही हूँ, इच्छा भोग, कामना। अरे बन्धुओं! जीवन क्षणभंगुर है, क्षणिक है। आज है, कल की कौन कहे?इसी जीवन में खाओ, पियो और मौज करो। जिन्दगी का नाम ही भोग है। भोगो, जितना चाहे भोगो। भोग ही आनन्द है, स्वर्ग है। मृत्यु के बाद, जब ईश्वर के दरबार में, अपना हिसाब देने के लिए हाजिर होंगे, तब ईश्वर पूछेगा – 'पृथ्वीलोक में तुमने क्या-क्या भोगा?तुम्हारे मुख से नकारार्थी शब्द सुनकर ईश्वर आज्ञा देगा – 'पुनः जन्म लो, पृथ्वीलोक में पहुँचो, सभी भोगों का आनन्द लो। मोक्ष ने अपने आपको विलग करते हुए, अपने मन्तव्य को आगे बढ़ाया – 'मैं मोक्ष हूँ। मोक्ष का दूसरा नाम है मुक्ति। दुःखों से छुटकारा ही मुक्ति है। पता नहीं, और क्या-क्या कहता गया – अन्यों ने 'मोक्ष' को सुना ही नहीं।

बीच में ही टोकने के कारण 'धर्म' अधिक विचलित हो उठा। अर्थ ने उसकी बात को अधूरा ही रखा था, 'अरे भाई! मुझे अपनी बात तो पूरी करने दो। मैं पक्षपातरहित न्याय हूँ, सत्य का स्वरूप हूँ।' धर्म की गपशप सुनकर 'मोक्ष' अधिक बौखला गया था। धर्म को थामते हुए उसने भी अपना मन्तव्य जारी रखा – 'अरे धर्म! अब तो तू रहा ही नहीं। तेरे तो कई टुकड़े हुए। परिवर्तनशील समय ने तेरी अर्थवत्ता ही नष्ट कर दी है। तेरा स्थान जरथुस्त्र ने लिया – पारसी धर्म चल पड़ा। जरथुस्त्र का स्थान मूसा इब्राहीम ने लिया, यहूदी धर्म चल पड़ा, यहूदी का स्थान जैन और बौद्धों ने ग्रहण किया। ईसाइयों ने जैन, बौद्ध धर्म को पछाड़ा। उसके बाद 'इस्लाम' आया। इसके अनन्तर भी अनेक पन्थ, साम्प्रदायी आये। इन सभी धर्मों का देवता अलग, विचाराधारा अलग, विश्वास भी अलग-थलग हैं। सभी का अपना-अपना अखाड़ा है। धर्म के इन ठेकेदारों ने, सच्चे तथा एकमात्र धर्म की छीछालेदर ही कर दी है। न सच्चा धर्म रहा, न कोई सच्चा सिद्धान्त ही। 'धर्म', 'मोक्ष' की कडुवाहट को सहन कर नहीं सका। धर्म ने उतनी ही कडुवाहट से मोक्ष की घिग्गी बन्द कर देना चाहा। 'अरे मोक्ष! तेरा तो अस्तित्व ही कहाँ है?अब तो तू केवल तीर्थों में बसा हुआ है। तीर्थों की यात्रा करो, 'मोक्ष' पाओ, नदियों में डुबकियाँ लगाओ, 'मोक्ष' पाओ। मोक्ष! तेरे पतन की यह महाकथा है। 'धर्म' पागल हुआ। वह अन्यों को छोड़कर, काम के पीछे पड़ा। अरे 'काम'! तू किसी समय 'काम देवता' था, अब तू 'काम राक्षस' कहलाने लगा है। तेरे चंगुल से बचा क्या है?खिलती हुई नन्हीं कली से लेकर 60-70 वर्ष की बुढ़िया भी तेरी शिकार हुई है, हो रही है। तू तो रम, रमा, बार-बाला, सेक्स स्कैण्डल में रमा है। हे काम! तेरी ज्वाला में सारा देश झुलस रहा है। क्या तेरी यही श्रेष्ठता है।'

प्रारम्भ में तो सभी पुरुषार्थी शब्द युद्ध में मग्न थे। धीरे-धीरे उनका संयम टूटने लगा। फिर वे हाथापायी पर उतर आये। किसी ने किसी का गला पकड़ा, किसी ने कमीज का कॉलर ही पकड़ा, किसी ने किसी की टाँग ही पकड़ी, सभी ने एक-दूसरे के वस्त्र ही फाड़ दिये, वे अर्द्धनग्न हुए, झगड़ते-झगड़ते नंगे ही हुए। पुरुषार्थियों के शोर-शराबे से समाज की शान्ति भंग हुई। जोर-जोर की आवाज से, समीप के थाने के दरोगा जी आ धमके। दरोगा ने सोचा, न समझा, उसने पुरुषार्थियों की जमकर पिटाई कर दी और उन्हें थानेदार के सामने खड़ा कर दिया। थानेदार, पुरुषार्थियों की हालत देखकर दंग ही रह गया। उसने बारी-बारी से सबकी पूछताँछ कर यह जानने का प्रयत्न किया कि मामला क्या है?उसे समझने में देर नहीं लगी कि पुरुषार्थियों का यह आपस का मामला है। प्रथम थानेदार ने पुरुषार्थी बन्दियों को आपस में सुलह करने का सुझाव दिया, पर किसी ने माना ही नहीं। थानेदार ने जब देखा कि मामला गम्भीर है, तब उसने रिपोर्ट तैयार की कि सार्वजनिक स्थान पर अशान्ति पैदा करना, समूचे मानव समाज की शान्ति, सुख, आनन्द छीन लेना, दुष्कर्म के मामले की उसने रिपोर्ट तैयार की, आज्ञा दी कि पुरुषार्थियों को बेड़ियाँ डालकर, उन्हें परमात्मा के न्यायालय में हाजिर करें।

थानेदार की आज्ञानुसार सभी कैदी न्यायालय में हाजिर हुए। न्यायाधीश महोदय पधारे – उन्होंने अपना न्याय आसन ग्रहण किया। गम्भीर मुद्रा में सभी कैदियों की ओर अपनी दृष्टि दौड़ायी। मामले की गम्भीरता को पहचानने में उन्हें देर नहीं लगी; क्योंकि थानेदार की रिपोर्ट उनके सम्मुख थी। प्रथम, उन्होंने सबको अपना-अपना पक्ष रखने की आज्ञा दी। पुरुषार्थियों ने अपना-अपना राग अलापा, अपनी-अपनी ढफली बजायी, इतना ही नहीं, एक-दूसरे पर कीचड़ भी उछाला। न्यायाधीश परमात्मा दुःखी हुए – उन्हीं के सम्मुख वेदों के सिद्धान्त पतित हो रहे थे। एक ग्लास पानी पी गम्भीर हो कहने लगे – ''अरे बन्धुओं! तुम लोग कहाँ से कहाँ पहुँचे हो?कभी सोचा है?तुम पुरुषार्थी हो, वेदों के सिद्धान्त हो। वेद अनादि हैं, नित्य हैं, सार्वकालिक, सार्वभौमिक हैं। तुम भी अनादि हो – मनुष्य को श्रेष्ठतम बनाने वाले साधन हो। बन्धुओं! आप सभी अपने आपको पहचानो। अरे धर्म! तुम्हारी परिभाषाएँ अनन्त हैं – **'ध्रियते सुख प्राप्तये सेवयते स धर्मः, पक्षपातरहितो न्यायः, सत्याचारो वा'** अर्थात् सुख प्राप्ति के लिए न्याय और सत्यस्वरूप है – वह धर्म है। मनु ने धर्म के दस लक्षण दर्शाये हैं – 'धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध। मनुष्य जीवन का विशुद्ध आचरण ही धर्म है। धर्म का आधार सत्य है, सत्य ही धर्म है।

'अर्थ' की ओर अँगुली उठाते हुए, न्यायाधीश महोदय 'अर्थ' को आगाह करने के स्वर में कहने लगे, 'अर्थ'! तुम्हारी भी महत्ता है। अर्थ मनुष्य जीवन का केन्द्र बिन्दु है। पिण्ड पोषण के लिए 'अर्थ' की ओर प्रवृत्त होना, यह मानव जीवन की सहज प्रवृत्ति है। 'अर्थ' को अध्यात्मक की भित्ति पर प्रतिष्ठित करना मेरा वेदों में सन्देश है। 'अर्थ' का उपार्जन न्यायपूर्वक और धर्म के द्वारा ही होना चाहिए। केवल पुरुषार्थ से कमाया धन, अपना धन समझे। अर्थार्जन से स्वयं का भला हो और अन्यों का भी भला हो। चोरी-डकैती, छल-कपट, हिंसा, अन्याय आदि से प्राप्त धन यह वर्जित अर्थ है। ऐसा वर्जित अर्थ 'क्लेश' एवं 'विनाश' का कारण है। अर्थ की शुचिता ही वरेण्य है। अर्थ! बताओ – क्या तुम अपने अर्थ को समझ गये?तुम तो वर्तमान में काफी बदल गये हो। वर्तमान का हर वर्ग 'अर्थ' के संचय में लगा है। 'अर्थ' संचय में अनुचित कुछ नहीं है; पर उसमें सहजता होनी चाहिए।'

अब बारी आयी है 'काम' की। 'काम' को समझाते हुए उन्होंने कहा – 'पुरुषार्थ के सम्बन्ध में जीवन की सुविधाओं की प्राप्ति का नाम है 'काम'। केवल इच्छा, भोग, कामना आदि कदापि नहीं। 'काम' में मनुष्योचित्त पदार्थों का सेवन, जीवन-रक्षा और समाज-देश की सेवा-भावना निहित है।'

'मोक्ष' न्यायाधीश की बातों को बड़े ध्यान से सुन रहा था। वह भी अपने अर्थ को जानने के लिए उत्सुक था, उसने भी अपने 'अर्थ' को खोया था। परम पुरुषार्थ का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष अर्थात् मुक्ति, दुःख से मुक्ति, दुःख का ध्वंस ही मोक्ष है। मनुष्य जन्म-जन्मान्तर के फेरे में फँसा हुआ है, वह इससे छुटकारा चाहता है। इस छुटकारे में मनुष्य जब सफल होता है, तब वह 'मोक्ष' को प्राप्त करता है।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष – ये वैदिक संस्कृति के चार पुरुषार्थ हैं। उनके बीच अभिन्नता दर्शाते हुए, न्यायाधीश ने पुरुषार्थ की महिमा का बखान किया। पुरुषार्थ ही आश्रमों-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास की संजीवनी है। बुद्धि के लिए धर्म की, शरीर-पोषण के लिए अर्थ की, मन की सन्तुष्टि के लिए 'काम' की और आत्मा की सन्तुष्टि के लिए 'मोक्ष' की आवश्यकता है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही पुरुषार्थ, अभिन्न रूप से मनुष्य जीवन के अंग बने हुए हैं। मेरी इच्छा है – ये पुरुषार्थ अनेक काल तक अभिन्न अंग बने रहें – अन्यथा विनाश है ही।

''धर्मार्थकाममोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते।
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम्॥

– 11, भोसले इलायट, भोसले नगर,
पुणे-411007 (महाराष्ट्र)

thearyasamaj.org

पंजाब में किया गया सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का भव्य सम्मान

पंजाब में नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या तथा जातिवाद के विरुद्ध स्वामी आर्यवेश जी का आह्वान

आर्य समाज के नेतृत्व में समाज के सभी वर्ग एवं संगठन मिलकर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करें

आर्य समाज बरनाला (गुरदासपुर) द्वारा आयोजित 39वां विश्वशांति यज्ञ एवं आर्य महासम्मेलन 3 से 9 नवम्बर, 2014 तक श्रद्धापूर्वक एवं हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने की जबकि श्री अश्वनी कुमार शर्मा एडवोकेट प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब एवं श्री ओम प्रकाश आर्य महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित हुए। प्रात: 9 बजे स्वामी आर्यवेश जी का बड़ा ही भव्य स्वागत आर. एस. स्टोर वेल गुरदासपुर पर किया गया। क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं के मुख्य अधिकारी, धार्मिक, सामाजिक नेता जिला भर से आर्य समाज के अधिकारियों सहित कारों, मोटर साईकिलों का काफ़िला वैदिक धर्म की जयकारों के साथ बरनाला पहुंचा।

स्वामी जी का स्वागत करने वालों में दीनानगर से श्री अरविन्द मेहता जी उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा श्री भारत भूषण जगयालिया वरिष्ठ उपप्रधान जिला आर्य सभा, बटाला से श्री इन्द्रजीत आर्य उपप्रधान जिला आर्य सभा, गुरुदासपुर से श्री जितेन्द्र त्रेहण उपप्रधान जिला आर्य सभा, धारीवाल से श्री सोमनाथ जी आर्य, अवाखां से प्रो. केवल कृष्ण महामंत्री जिला आर्य सभा, दीनानगर से श्री दलवीर सिंह जी सुपरिन्टेन्डेन्ट पावर काम, बरनाला से श्री सुदर्शन कुमार फौजी प्रधान आर्य समाज बरनाला तथा श्री यशपाल सिंह जी वरिष्ठ उपप्रधान आर्य समाज बरनाला तथा पंजाबी लोक गायक श्री अमरीक सिंह जी जग्गी, उपमंत्री आर्य समाज बरनाला, सिधवां जमीतां से श्री सतपाल आर्य प्रधान आर्य समाज तथा गुरुदासपुर से श्री आर. एस. मलारिया रिटायर्ड डिप्टी जनरल मैनेजर पंजाब नेशनल बैंक, बरनाला से श्री रमण कुमार एडवोकेट, इं. सुशील कुमार जी एस. डी. ओ. टाउन प्लैनिंग, पठानकोट से इं. मनमोहन सारंगल जी, गुरदासपुर से श्री एच. एस. लखनपाल जी एडवोकेट, डॉ. लोकेश गुप्ता जी डेण्टल सर्जन सिविल अस्पताल, प्रो. बलजिन्द्र सिंह सेखों जी सरकारी कॉलेज, श्री महिन्द्रपाल कलोत्रा जी ब्रांच मैनेजर एल. आई. सी., श्री पूरणचंद वफा जी प्रसिद्ध कवि, सरदार हरमिन्द्र सिंह वालिया एकाउंटेंट पावरकाम, श्री सतीश कुमार गुप्ता जी मंत्री अखिल भारतीय महाजन सभा जंडियाल बिरादरी, श्री यशपाल कौशल जी जिला प्रधान गौ रक्षा समिति, मास्टर सतपाल जी प्रधान शिव मंदिर कमेटी प्रेमनगर, श्री अशोक कुमार जी प्रधान शिव सांई लंगर कमेटी, श्री प्रभजिन्द्र कुमार जी प्रधान कैमिस्ट एसोसिएशन, श्री शैलेन्द्र भास्कर जी उपप्रधान शिव

परिवार कमेटी, श्री दर्शन कुमार जी सेक्रेटरी खत्री सभा, इं. राजीव शर्मा जी सरवेयर एण्ड लास असैस्र, इं. संजीव वासुदेवा जी प्रोप. आर. एस. स्टोरवैल, इं. प्रेमचन्द जी पावरकाम आदि मुख्य थे।

श्री भरत लाल शास्त्री एवं श्री हितेश शास्त्री, अशोक शास्त्री के सानिध्य में विश्वशांति के लिए यज्ञ में हजारों श्रद्धालुओं ने आहुति डाली ।आर्य महासम्मेलन में अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में पूज्य स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि यदि महर्षि दयानन्द जी अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य शब्द न लिखते तो स्वराज्य की पुकार सुनाई न देती। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रशस्त मार्ग पर ही राष्ट्रीय क्रांति का रथ आगे बढ़ा एवं स्व-संस्कृति, स्वदेश और स्व-इतिहास आदि के प्रति गौरव की जिस भावना का बीजारोपण महर्षि ने किया था उसके फलस्वरूप देश में राष्ट्रीयता की भावनाएं जागृत हो सकीं। इसलिए महर्षि नवराष्ट्र के मन्त्रदाता गुरु थे।

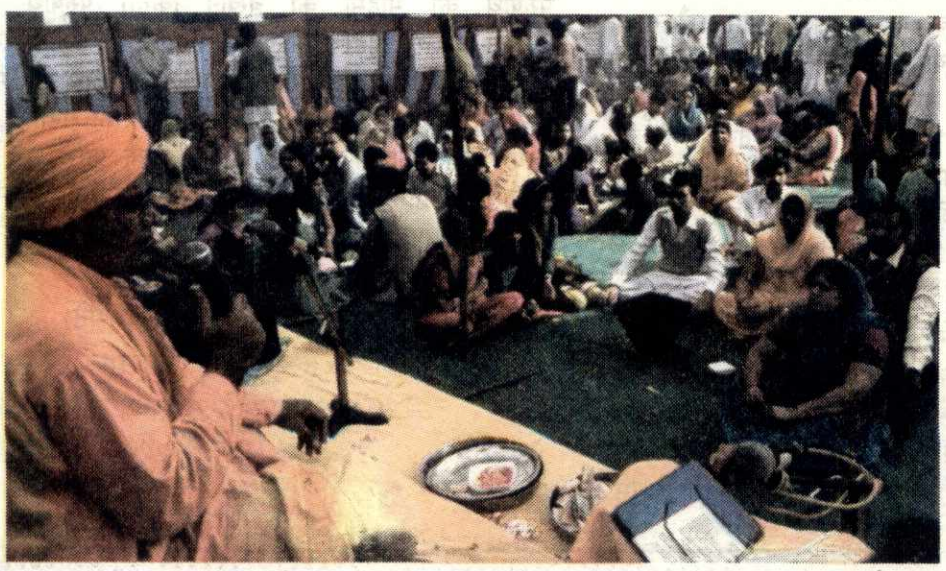

नशों के बढ़ रहे प्रचलन के बारे में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि पंजाब नशों का गढ़ बन चुका है। यदि इस पर अंकुश न लगाया गया तो युवा पीढ़ी का नाश हो जायेगा जो देश के लिए घातक सिद्ध होगा। इसके लिए आर्य समाज के नेतृत्व में बहुत बड़े सामाजिक आन्दोलन की आवश्यकता है। स्वामी जी ने केन्द्र सरकार से अपील की कि पूरे देश में नशाबन्दी अविलम्ब लागू की जाये क्योंकि सारी बुराईयों की जड़ में शराब तथा नशे की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

स्वामी जी ने कहा कि आज देश भीषण अराजकता के दौर से गुजर रहा है। चारों तरफ जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड और नारी उत्पीड़न का बाजार गर्म है। सारे देश की नजरें आर्य समाज पर टिकी हैं, क्योंकि आर्य समाज के पास ही वह वैचारिक और आध्यात्मिक दृष्टि है जो इन महारोगों से समाज को बचा सकती है। अत: मैं आप सबका आह्वान करता हूँ कि हम सब आर्य समाज को गति प्रदान करने में जुट जायें। आर्य समाजों में ऐसे कार्यक्रम आयोजित करें जिसमें अन्य व्यक्ति भी आर्य समाज से आकर्षित हों आज आर्य समाज को बहुउपयोगी आर्य समाज बनाने की आवश्यकता है। आर्य समाजों में योग आदि की कक्षाएं लगाये प्रशिक्षण शिविर लगाये तथा अन्य आकर्षक कार्यक्रमों के माध्यम से आस-पड़ोस के युवाओं को आकर्षित कर सकते हैं। उन्हें अपने साथ जोड़ सकते हैं। योग्य युवाओं को अधिक से अधिक आर्य समाज का सदस्य बनायें तथा उनका चारित्रिक विकास करें स्वामी जी ने कहा कि समग्र समाज में परिवर्तन लाने के लिए युवाओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। तभी हम उनको नशे आदि से दूर कर पायेंगे तथा समाज की मुख्यधारा से जोड़ पायेंगे। स्वामी जी ने कहा एक सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य जो हमें करना चाहिए वह है एक ऐसी छवि बनाना अपने कार्यों से, चरित्र से व्यवहार से जिससे पास पड़ोस के लोगों में एक विशेष छाप छूटे और इसके लिए गली मोहल्ले के लोगों के घरों में दुख तथा सुख में बराबर का भागीदार बनना होगा तथा उनकी सहायता करनी होगी। स्वामी जी ने कहा कि सप्तक्रांति के मुद्दों के माध्यम से हम अन्धविश्वास, कुरीतियों तथा समाज में फैल रहे भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, रिश्वतखोरी आदि के विरुद्ध आवाज बुलन्द करें तथा पंजाब सहित पूरे देश में जन-जागृति फैलाने का कार्य करें।

इस अवसर पर आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के अनन्य अनुयायी स्व. श्री वेद प्रकाश आर्य की स्मृति में स्व. श्री वेद प्रकाश द्वार का शिलान्यास भी पूज्य स्वामी आर्यवेश जी के कर-कमलों से किया गया। स्व. श्री वेद प्रकाश आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती सन्तोष आर्या एवं समस्त परिजन उपस्थित थे।

इस अवसर पर ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई थी। महासम्मेलन में आर्य समाज अमृतसर, रमदास, जालन्धर, लुधियाना, चण्डीगढ़, कपूरथला, पठानकोट, बटाला आदि से अधिकारी एवं आर्यजन भारी संख्या में पधारे। जिला आर्य सभा गुरदासपुर के प्रधान पूरे कार्यक्रम के सूत्रधार श्री तरसेम लाल आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान भारत जगयालिया, जितेन्द्र त्रेहन, अजय कुमार, संजीव वासुदेव, राजीव कुमार, प्रेस सचिव, सुशील बरनाला, सत्यपाल फौजी सुदर्शन फौजी, सोनिया गुलशन, राजरानी, गुरमीत, कौर, चंचल डोगरा, शोभा डोगरा, सतपाल आर्य, यशपाल कौशल आदि उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

युवा निर्माण

ओ३म्

राष्ट्र निर्माण

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव यद् भद्रं तन्न आसुव।।

(हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए। जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है, वह सब हमको प्राप्त कराइये।)

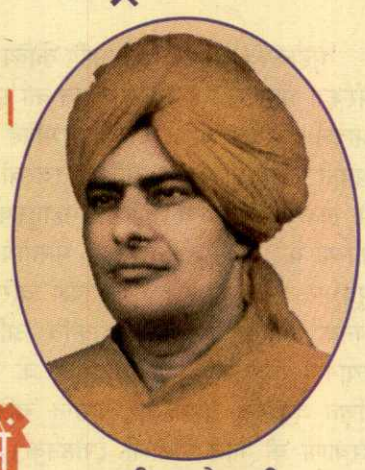

स्वामी इन्द्रवेश जी

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में

विशाल युवा शक्ति सम्मेलन

दिनांक 23 नवम्बर, 2014 (रविवार) प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक

स्थान : छोटूराम खेल स्टेडियम, सोनीपत रोड, रोहतक (हरियाणा)

अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

हरियाणा के विभिन्न जिलों से 10 हजार युवक-युवतियाँ भाग लेंगे।

"युवा वर्ग को चरित्र, नैतिकता, आध्यात्मिकता, ईमानदारी, समाज सेवा एवं देशभक्ति के संस्कार देने तथा अश्लीलता, उच्छृंखलता, नशाखोरी, दहेज एवं कन्या भ्रूण हत्या आदि बुराईयों के विरुद्ध संकल्प दिलाने के लिए यह ऐतिहासिक कार्यक्रम होगा।

आमंत्रित वक्ता एवं विशिष्ट अतिथि

मुख्यअतिथि : कैप्टन अभिमन्यु वित्तमंत्री, हरियाणा सरकार
अतिविशिष्ट अतिथि : डॉ. यशदेव शास्त्री, पातंजलि योगपीठ, हरिद्वार
विशिष्ट अतिथि : स्वामी यतीश्वरानन्द विधायक हरिद्वार ग्रामीण
: स्वामी रामवेश, अध्यक्ष, नशाबन्दी परिषद्, हरिद्वार
: श्री जसबीर सिंह देशवाल, विधायक सफीदों

प्रमुख वक्ता :-
श्री बिरजानन्द, महामन्त्री, सा. आ.यु.परिषद्
प्रो. श्योताज सिंह, महामन्त्री, बंधुआ मुक्ति मोर्चा
डॉ. रविप्रकाश आर्य, प्राचार्य, रा. महा.वि., बहादुरगढ़
स्वामी श्रद्धानन्द, उपाध्यक्ष, सा. आ. यु. परिषद्

यह आर्य समाज का एक अभिनव शक्ति प्रदर्शन होगा। आप सब अपने अधिक से अधिक साथियों के साथ सम्मेलन में पधारें तथा युवा निर्माण अभियान के साथ जुड़ें। सभी युवा ओ३म् के झण्डे तथा अपनी-अपनी आर्य युवक परिषदों के बैनर लेकर आयें।

निवेदक

आचार्य सन्तराम आर्य	ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य	बहन पूनम आर्या	बहन प्रवेश आर्या	डॉ. श्यामदेव
स्वागताध्यक्ष	मुख्य संयोजक	अध्यक्ष, बेटी बचाओ अभियान	संयोजक	बौद्धिकाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा)

सम्पर्क सूत्र : 0-9354840454, 9416630916 ● E-mail : yuvakparishad@gmail.com

thearyasamaj.org

रससिद्ध संस्कृत कवि डॉ. धर्मवीर कुण्डू तथा उनकी कृतियाँ

– डॉ. भवानी लाल भारतीय

महाकवि वाल्मीकि ने आदि काव्य रामायण की रचना कर संस्कृत भाषा में महाकाव्य लेखन का सूत्रपात किया। राम जैसे आदर्श धीरोदात्त चरित्र के शील, शक्ति और सौन्दर्य को उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा से अधिक तेजस्वी तथा दीप्त बनाया। तब से लेकर अद्यपर्यन्त आदर्श महापुरुषों पर केन्द्रित सैकड़ों काव्यों का सृजन हो चुका है। भारतीय नव-जागरण के आद्य सूत्रधार ऋषि दयानन्द के आदर्श चरित्र को लेकर विगत में अनेक प्रयास हुए हैं। महाकवि अखिलानन्द शर्मा रचित दयानन्द दिग्विजय तथा महाराष्ट्र के कवि पं. मेधाव्रताचार्य रचित दयानन्द दिग्विजय पर्याप्त चर्चित हैं। इसी श्रेणी में हरयाणा के गांव टिटौली (रोहतक), निवासी डॉ. धर्मवीर कुण्डू का नाम आता है जिन्होंने दयानन्द भास्करोदय शीर्षक सोलह सर्गों में समाप्त संस्कृत महाकाव्य की रचना की है।

यों तो साहित्य शास्त्रियों ने काव्य रचना के लिए और विशेषत: महाकाव्य रचना के उपयुक्त मानदण्डों की स्थापना की है तथापि कवि को यह स्वतंत्रता प्राप्त है कि वह इन नियमों का स्वरुचि के अनुसार ही पालन करें। दयानन्द भास्करोदय का मुख्य छन्द अनुष्टुप है। यह छन्द सर्वाधिक सरल है तथा इसकी रचना भी कष्टकारक नहीं होती। यही कारण है कि हमारे प्रमुख ऐतिहासिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत तथा अनेक पुराणादि ग्रन्थों में इसी छन्द का प्रयोग हुआ है। मूलशंकर (दयानन्द का पूर्वाश्रम का नाम) के जन्म तथा उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं का रसात्मक विवरण देने के पश्चात् कवि ने कुछ अध्यायों में अष्टांग योग, सुभाषित, वैदिक सूक्तियाँ, प्रेरक प्रसंग, प्राणायाम महत्त्व, काम निंदा आदि विषयों पर अपने श्लोकबद्ध विचार रखे हैं।

इस महाकाव्य की विषय वस्तु के विषय में निवेदन है कि लेखक को चाहिए था कि वह दयानन्द चरित्र पर कलम उठाने के पहले दयानन्द के कुछ प्रामाणिक जीवन चरितों का गम्भीर अनुशीलन करता। पं. लेखराम तथा पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने ऋषि जीवन लेखन में जितना श्रम किया है, वह अन्य कोई नहीं कर सका। मैंने 1983 में दयानन्द के उक्त प्रामाणिक जीवन चरितों का आधार लेकर एक बृहद जीवन चरित नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती लिखा था। इसका द्वितीय संस्करण हिण्डौन (राजस्थान) के घूड़मल प्रहलादकुमार ट्रस्ट ने 2009 में प्रकाशित किया है। ध्यान रहे कि विगत में दयानन्द के अमल धवल चरित को विकृत करने, दूषित करने तथा उसमें अनेक कल्पित कथाओं, मिथ्या उपास्थानों तथा अतिशंयोक्ति पूर्ण घटनाओं को मिश्रित करने के अनेक जघन्य प्रयास भी किये हैं। मेरे ऐसे मिथ्याचारियों से निरन्तर विरोध रहा और मैंने अपने लेखन से उनका सदा प्रत्याख्यान किया। कोलकाता के स्व. दीनबंधु वेद शास्त्री, स्वामी सच्चिदानन्द योगी (पूर्वाश्रम में पं. राजेन्द्रनाथ शास्त्री उनके पुत्र डॉ. वेदव्रत आलोक तथा भोपाल के वेदद्रोही आदित्य पाल सिंह आदि ने एक सर्वथा कल्पित अज्ञात जीवनी का प्रकाशन कर ऋषि के प्रति घोर अपराध किया है। डॉ. कुण्डू के लिए यह उचित होता कि वे दयानन्द के जीवन पर लेखनी उठाने के पूर्व इस ग्रन्थ के अन्त्य भाग में उल्लिखित लार्ड नार्थब्रुक से दयानन्द की भेंट, 1857 में उनकी कथित भूमिका, हरिद्वार में लक्ष्मीबाई तथा नाना साहब व तात्या टोपे आदि से उनकी तथाकथित भेंट आदि की सच्चाई या मिथ्यात्व को जानने का यत्न करते। मैं डॉ. कुण्डू को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि महाराज के किसी प्रामाणिक चरित में उक्त कल्पित प्रसंगों का नाम तक नहीं है। तथापि उनका यह प्रयास सराहनीय तथा प्रशंसनीय है।

संस्कृत पद्य में सत्यार्थप्रकाश का सुगम श्लोकबद्ध अनुवाद डॉ. कुण्डू का एक अन्य श्लाघनीय प्रयास है। विगत में 1925 में ऋषि की जन्म शताब्दी के अवसर पर पं. शंकरदेव पाठक ने सत्यार्थ प्रकाश का धारावाही संस्कृत गद्य में अनुवाद किया था, परन्तु इस कालजयी रचना को श्लोकबद्ध कर हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित करना प्रथम बार ही सम्भव हुआ है। सत्यार्थप्रकाश के चौदह समुल्लासों, भूमिका तथा स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकरण को इस प्रकार पद्य रूप देना एक चुनौती थी जिसे विद्वान लेखक ने स्वीकार कर सफल किया है। उनकी अन्य कृतियों का अनुशीलन उन्हें वर्तमान युग के संस्कृत लेखकों में अग्रस्थान दिलाता है।

-3/5 शंकर कालोनी, श्री गंगानगर, राजस्थान

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव 16, 17, 18 फरवरी, 2015 को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर 'टंकारा समाचार' का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 30 दिसम्बर, 2014 तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख, वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जनोपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों, ऐसा निर्णय किया है। यदि प्रकाशन सामग्री टाईप की हुई हो तो सुविधाजनक रहेगा। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूँगा।

- अजय सहगल, सम्पादक, टंकारा समाचार,
ए-419 डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली-110024
मे.:-9810035658

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

स्वामी दयानन्द काशी शास्त्रार्थ का 145वाँ स्मृति दिवस समारोह में संगोष्ठी
दयानन्द ने वेद और वेदानुकूल मत को पुनर्प्रतिष्ठित किया

19वीं शती में विलक्षण संन्यासी स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आदि शंकराचार्य काल के लगभग 2400 वर्षों के उपरान्त वेद और वेदानुकूल मत को पुनर्प्रतिष्ठित किया और सनातन तत्वज्ञान से भटके लोगों को रास्ता दिखाया, संसार में पंथो, मजहबों और सम्प्रदायों में व्याप्त अज्ञान, अविद्या तथा पाखण्ड को खारिज कर उनकी कथित धार्मिक दार्शनिक देसनाओं पर विमर्श और शास्त्रार्थ की चुनौती देते हुए सवालों की झड़ी लगा दी। उक्त विचार स्वामी दयानन्द के ऐतिहासिक काशी शास्त्रार्थ के 145वें दिवस के अवसर पर मंगलवार को काशी आर्य समाज बुलानाला में आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि श्री बेचन सिंह वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. ने व्यक्त किये।

मुख्य वक्ता डॉ. जय प्रकाश भारती पुस्तकाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ने कहा कि सारा संसार पाश्चात्य विद्वानों की वेद विषयक भ्रान्त धारणाओं से आक्रान्त था, स्वामी दयानन्द ही थे जिन्होंने वेद ज्ञान के मर्म को समझाया और सारी दुनिया के लोगों को वेदों की ओर लौटने का आह्वान कर त्रैतवाद की दार्शनिक क्रांति का प्रवर्तन किया।

विशिष्ट अतिथि श्री रमाशंकर आर्य उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. ने बतलाया कि आतंकवाद के मूल में धर्मान्धता है, विज्ञान के युग में तर्कसंगत धार्मिक विश्वासों की आवश्यकता है।

काशी आर्य विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने कहा कि पुराणों में वर्णित अविद्यायुक्त बातों के साथ-साथ जैन, बौद्ध, बाईबिल तथा कुरान द्वारा प्रतिपादित मतों की समीक्षा स्वामी दयानन्द ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में की है।

पूर्व सभासद लीलाराम सचदेवा ने कहा कि दयानन्द सरस्वती ने नर-नारी समानता और नारी सशक्तिकरण की जबरदस्त पैरवी की।

आर्य विदुषी डॉ. गायत्री आर्या ने बतलाया कि स्वामी दयानन्द ने दलितों और नारियों की शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया।

काशी आर्य समाज के प्रधान श्री श्रीनाथ सिंह पटेल की अध्यक्षता में आयोजित उक्त संगोष्ठी में प्रकाश नारायण शास्त्री, डॉ. विशाल सिंह, श्री शम्भूनाथ, बृजभूषण सिंह, लालचंद आर्य, जागृति एवं शिवांगी आर्य, सत्यनिष्ठा आर्य, डॉ. ज्योत्सना गुप्ता ने भी विचार व्यक्त किये। श्री रमेश जी आर्य ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री मोती लाल आर्य के संयोजकत्व में सम्पन्न हुये वैदिक यज्ञ से हुआ। यजमान श्री रमाशंकर आर्य व डॉ. जय प्रकाश भारती थे। अतिथियों का स्वागत कोषाध्यक्ष डॉ. विशाल सिंह संचालन प्रकाश नारायण शास्त्री, धन्यवाद प्रकाश श्री अशोक आर्य ने किया, शांतिपाठ श्री मोतीलाल आर्य पं. ज्ञान प्रकाश ने कराया।

- प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री
काशी आर्य समाज, बुलानाला,
वाराणसी-221001

महर्षि निर्वाण दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना द्वारा महर्षि दयानन्द जी का 131वाँ निर्वाण दिवस 23 अक्टूबर (गुरुवार) को मनाया गया साथ ही दीपावली पर्व भी मनाया गया कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ मुख्य यजमान श्रीमती यशोदा विग, महेन्द्रपाल विग एवं श्री राजेश मरवाह एवं अनिता मरवाह व श्रीमती रेणू टंडन व श्री सुमित टंडन एवं श्रीमती रीटा अबरोल व श्री सुभाष अबरोल, श्री सुरेन्द्र टंडन रहे, यज्ञ के ब्रह्मा कर्मवीर शास्त्री पुरोहित आर्य समाज दाल बाजार रहे। मुख्य वक्ता स्वामी शोभानन्द जी रहे एवं श्री श्रवण बत्रा जी रहे। स्वामी शोभानन्द जी ने अपने प्रवचन में कहा कि सदियों से ढोंग, पाखंड एवं रूढ़ियों की बुनियाद पर खड़ी पाखंड की इमारत को ऋषिवर देव दयानन्द ने युक्ति तर्क एवं प्रमाणों के प्रहारों से ध्वस्त कर विश्व के शिखर पर वैदिक धर्म की पताका को फहरा दिया।

श्री श्रवण कुमार बत्रा ने अपने वक्तव्य में महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द सरस्वती द्वारा ही भारत में 1857 की क्रांति का उद्घोष हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा कर्मवीर शास्त्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने सदियों से अविद्या एवं अंधविश्वासों के आगोष में डूबे आर्यवर्त भारत देश को सत्य ज्ञान का उजाला देकर नई रोशनी के भास्कर सत्यार्थ प्रकाश जैसा कालजई ग्रंथ आर्य जाति को सौंप दिया। जब सारा संसार दीपावली मना रहा था तब वह हजारों चिरागों को जलाने वाला दिया सदा के लिए बुझ गया।

कार्यक्रम में अपने भजनों से महर्षि दयानन्द के बलिदान की याद ताजा करने वालों में श्री राजेन्द्र बत्रा, जगदीश नारंग, बाला गंभीर, सुभाष अबरोल विशेष सहयोगी वरिष्ठ उपप्रधान देवपाल आर्य प्रधान आत्म प्रकाश जी, अरूण सूद, संजीव चड्डा, रमाकांत महाजन, वेद प्रिय चावला, कुलदीप राय, चरणजीत पाहवा, के. सी. पासी, ओम प्रकाश गुप्ता आदि रहे। कार्यक्रम के उपरान्त जलपान की भी व्यवस्था की गई।

- आत्म प्रकाश, प्रधान

विश्व भाषा हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषा का दर्जा दिलाने के लिए युद्ध स्तर पर प्रयत्न करें
माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से अपील

संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषाओं में विश्व की सर्वाधिक जानी जाने वाली भाषा का अधिकृत भाषा न होना जगतगुरु भारत का अपमान है। विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र की भाषा को स्थान न देकर संयुक्त राष्ट्र विश्व की 1/6 आबादी की भावनाओं के साथ जो खिलवाड़ कर रहा है। इसे आप जैसे सर्व शक्तिमान ही रोक सकते हैं ऐसी हमारी पक्की धारणा है। हमारा आपसे अनुरोध है कि, हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषा बनाने में युद्ध स्तर पर शक्तिशाली एवं ठोस कदम बढ़ाईयेगा और अपने भारत की गरिमा को बढ़ाईयेगा।

महर्षि दयानन्द अखंड राष्ट्र के समर्थक थे। उन्होंने राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए गुजराती भाषा-भाषी होते हुए भी बंगाली विद्वान् स्व. केशवचंद्र से प्रेरित होकर हिन्दी सीखी तथा अपने सभी ग्रंथ हिन्दी में प्रकाशित किये उनका मानना था कि ''हिन्दी ही सम्पूर्ण राष्ट्र को एकसूत्र में पिरो सकती है।''

यह स्मरण रखने की बात है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए आंदोलन का श्री गणेश हिन्दी क्षेत्र के लोगों द्वारा नहीं किया गया। यह आंदोलन विशाल दृष्टि रखने वाले उन चारों व्यक्तियों द्वारा हुआ था जो स्वयं अहिन्दी भाषी थे। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रथम व्यक्ति थे, उन्हीं का अनुसरण किया बंकिम चन्द्र चटर्जी, बाल गंगाधर तिलक और महात्मा गांधी ने। राष्ट्रीयकरण के सर्वाधिक सुलभ उपकरण के रूप में हिन्दी को ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया।

भारत को एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में देखा जा रहा है। दक्षेस देश (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) कभी भी एक मुद्रा (अर्थात् रुपया) और एक भाषा यानि हिन्दी को अपना सकते हैं। वैसे भी दक्षेस देशों में हिन्दी का प्रचलन काफी तेजी से बढ़ रहा है।

हिन्दी एक सरल, व्यावहारिक एवं जीवंत भाषा है इस भाषा में जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। अत: हिन्दी वैज्ञानिक भाषा है। इसके पास विपुल शब्द भंडार है। संस्कृत के साथ-साथ इसने अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि अन्य भाषाओं के हजारों शब्दों को ग्रहण किया है, हिन्दी आज समस्त भारत की सम्पर्क भाषा बन गई। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का विकास हो रहा है। विश्व के लगभग 100 देशों में बोली जाती है।

आश्चर्यजनक किन्तु सत्य : आपको जानकर आश्चर्य होगा कि विश्व की कुल जनसंख्या 7 अरब है (7,02,88,91,239) इनमें से हिन्दी जानने वाले (1,20,73,93,250) है। अर्थात् विश्व का हर छठवा व्यक्ति हिन्दी जानता है। (संदर्भ राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'राजभाषा भारती अंक अप्रैल-जून, 2013 पृष्ठ क्र.-2833 डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल इनका शोध पत्र-2012 देखें।)

दिल्ली चलो ओ३म् दिल्ली चलो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 36 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्य नेता, शिक्षाविद् डा. अशोक कुमार चौहान के सानिध्य एवं
युवा वैदिक विद्वान डा. जयेन्द्र आचार्य के ब्रह्मत्व में

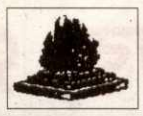

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 24, 25, 26 जनवरी 2015 (शनि, रवि व सोमवार)

स्थान: कमल पार्क, सफदरजंग एनक्लेव (निकट ग्रीन पार्क मैट्रो स्टेशन) नई दिल्ली-29

विराट् शोभा यात्रा: शनिवार 24 जनवरी 2015, प्रात: 10:30 बजे

शुभारम्भ: कमल पार्क, सफदरजंग एनक्लेव, दिल्ली से प्रारम्भ होगी

मुख्य आकर्षण

* नारी शक्ति सम्मेलन * वेद सम्मेलन * शिक्षा-संस्कृति निर्माण सम्मेलन
* भव्य संगीत संध्या * आर्य युवा सम्मेलन * राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रात: से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 31 दिसम्बर 2014 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके।
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 31 दिसम्बर 2014 तक फोन न: श्री प्रकाश वीर-9811757437, श्री ओम बीर-9868803585, श्री सत्यपाल-9899200447, श्री राणा जी-9868089983 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया वानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदक

आनन्द चौहान	डॉ. अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	रविदेव गुप्ता	चतरसिंह नागर
दर्शन अग्निहोत्री	राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	कोषाध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	स्वागत मंत्री
प्रभात शेखर	9810117464	9013137070	9871581398	9818006185	9211501545

यशोवीर आर्य, रामकुमार सिंह, कृष्णचन्द पाहुजा, रामकृष्ण शास्त्री राष्ट्रीय उपाध्यक्ष — दुर्गेश आर्य, देवेन्द्र भगत, राकेश भटनागर, सुभाष बब्बर राष्ट्रीय मंत्री

आनन्दप्रकाश आर्य, सत्यभूषण आर्य, मनोहरलाल चावला राष्ट्रीय उपाध्यक्ष — प्रवीण आर्य, सुरेश आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, सुशील आर्य, संतोष शास्त्री राष्ट्रीय मंत्री

कार्यालय: आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष: 9810117464, 9868051444

E-mail:aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website: www.aryayuvakparishad.com

ओ३म्

आर्य समाज विशाखा एनक्लेव

के तत्वावधान में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के प्रधान

स्वामी आर्यवेश जी एवं

गौ सेवक आचार्य धूमसिंह शास्त्री जी

के अभिनन्दन समारोह में आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं

कार्यक्रम

रविवार 23 नवम्बर 2014, सायं 5 बजे से 7.30 बजे तक

आर्य समाज विशाखा एनक्लेव, पी.यू. ब्लॉक, पीतमपुरा, दिल्ली

आर्य रत्न अवार्ड से सम्मानित

सर्वश्री भगवानलाल चावला, सोहनलाल मुखी, शिवकुमार गुप्ता, उमाशंकर साहू सतीश आहुजा, सुशील विज, चन्द्र डुडेजा, सुषमा अरोड़ा, भारत गौरव प्राची भारद्वाज

मुख्य अतिथि: डॉ. उदित राज (सांसद, उत्तरी पश्चिमी दिल्ली)

अध्यक्षता: श्री दिनेश गुप्ता (प्रमुख समाज सेवी पूर्वांचल समाज)

विशिष्ट अतिथि

श्रीमती रेखा गुप्ता (पार्षद, महामंत्री भाजपा दिल्ली) — श्रीमती ममता नागपाल (निगम पार्षद)
डा. अनिल आर्य (उपाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा) — श्री राजेश अरोड़ा (प्रमुख समाज सेवक)
श्री सुरेन्द्र गुप्ता (प्रधान, उत्तरी पश्चिमी मंडल) — श्री भारतभूषण गर्ग (प्रधान दिव्य गौशाला)

स्वागताध्यक्ष - डॉ. धर्मवीर आर्य

मुख्य वक्ता- आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, आचार्य छविकृष्ण शास्त्री

प्रीति भोज - रात्रि 7.30 बजे से

दर्शनाभिलाषी

रणसिंह राणा	ओमप्रकाश गुप्ता	सूर्यप्रकाश डुडेजा
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष
9999995017	9891729173	9990119649

thearyasamaj.org

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 14–15 नवम्बर, 2014
प्रकाशन की तिथि : 13 नवम्बर, 2014
वैदिक सार्वदेशिक
13 से 19 नवम्बर, 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

मिलकर चलो, बोलो

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

—ऋ० १०/१९१/२

ऋषिः—संवननः।। देवता—संज्ञानम्।। छन्दः—अनुष्टुप्।।

विनय—हे मनुष्यो! सदा मिलकर चलो, मिलकर आचरण करो, मिलकर बोलो और तुम्हारे मन मिलकर सदा एक निश्चय किया करें। यह दैवी नियम है। देव लोग सदा 'संजानानाः' होकर—समान मन और ज्ञानवाले होकर ही—अपने कार्य—भाग को निबाहते आये हैं। असल में यह मनों द्वारा ज्ञान की एकता ही वास्तविक एकता है। मन की एकता होने पर वचन और कर्म (आचरण) की एकता होने में कुछ देर नहीं लगती। देखो, ये देव लोग सब जगह 'संजानानाः' होकर ही कार्य कर रहे हैं। आधिदैविक जगत् में देखों, अग्नि—वायु आदि देव जगत्—संचालन के लिए इकट्ठे होकर अपने—अपने भाग को ठीक—ठीक कर रहे हैं। अध्यात्म में प्राण—इन्द्रिय आदि देवों को देखो कि ये कैसे संगठित होकर जीवन को चला रहे हैं। पैर में कांटा चुभता है तो त्वचा—प्राण—मन—हाथ आदि सब देव एक क्षण में कैसा सहयोग दिखाते हैं। आधिभौतिक जगत् में भी सब ज्ञानी=देव—पुरुष पुराने काल से लेकर आज तक संगठित होकर ही बडी—बड़ी सफलताएँ प्राप्त करते रहे हैं। 'मिलना' दैवी प्रवृत्ति है; क्षुद्र स्वार्थों को न छोड़ सकना और न मिलना आसुरी है, अतः हे मनुष्यों! तुम मिलो, अपने सैकड़ों क्षुद्र स्वार्थों को छोड़कर एक बड़े समष्टि—स्वार्थ के लिए सदा मिलो। लाखों—करोड़ों के मिलकर काम करने से जो तुम्हें बड़ी भारी सामूहिक सिद्धि मिलेगी, उससे फलतः तुम लाखों—करोड़ों में से प्रत्येक व्यक्ति के भी सब सच्चे स्वार्थ अवश्य सिद्ध होंगे। मिलने में बड़ी भारी शक्ति है। तुम मिलकर चलो, मिलकर करो तो कौन—सा कार्य असाध्य है। तुम मिलकर बोलो तो संसार को हिला दो और मिलकर ध्यान करने में तो अपार—अपार शक्ति है, अतः हे मनुष्यो ! मिलो, मिलो ! सब प्रकार से मिलकर अपने सब अभीष्ट सिद्ध करो।

शब्दार्थ—हे मनुष्यो ! **संगच्छध्वम्**=मिलकर चलो, आचरण करो, **संवदध्वम्**=मिलकर बोलो, और **वः**=तुम्हारे **मनांसि**=मन **संजानताम्**=मिलकर ज्ञान प्राप्त करें, समान ज्ञानवाले हों; **यथा**=जैसेकि **पूर्वे देवाः**=पहले के देव लोग **संजानानाः**=मिलकर जानते हुए, एकज्ञान होते हुए **भागम्**=भजनीय वस्तु की, अपने भाग की **उपासते**=उपासना करते, उपलब्धि करते रहे हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :—

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

फेसबुक : Swami Aryavesh
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

20 नवम्बर, 2014 तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।